काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शताब्दी वर्ष समारोह समिति एवं इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय 'ध्रुपद महोत्सव' का संक्षिप्त विवरण

(दिनांक १७-१०-२०१६ से १९-१०-२०१६ तक)

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह सांस्कृतिक समिति तथा इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र के सहयोग से संगीत एवं मंचकला संकाय स्थित पं० ओंकारनाथ ठाकुर प्रेक्षागह में आयोजित त्रिदिवसीय ध्रपद महोत्सव का शुभारंभ सोमवार दिनांक १७ अक्टूबर, २०१६ को अपराह्न ३ बजे हुआ जिसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति श्री जी०सी० त्रिपाठी ने किया। अपने उद्बोधन में प्रो० त्रिपाठी ने कहा कि संगीत केवल मनोरंजन का विषय नहीं है। संगीत से मन, बुद्धि एवं आत्मा को सही दिशा में योजित करने में सफलता मिलती है। ध्रुपद महोत्सव से भारतीय संगीत परम्परा के संरक्षण एवं संवर्धन को नयी दिशा प्राप्त होगी।

ध्रुपद महोत्सव की प्रथम प्रस्तुति विश्वविद्यालय के ही गायन एवं मंचकला संकाय की छात्र-छात्राओं द्वारा की गयी। इसके अन्तर्गत ध्रुपद वृन्दगान, राग भीमपलाशी, पदकुन्जन में रच्योदास, राग किरवानी में सुरको गाये ध्याये सुरताल में रचना प्रस्तुत की गयी जिसके निर्देशक उक्त विभाग के ही प्रो० ऋत्विक सान्याल थे।

बाहर से आये हुये कलाकरों में प्रथम श्रीमती रंजिता मुखजीं, रवीन्द्रभारती विश्वविद्यालय, कोलकाता की अतिथि आचार्या ने राग मुलतानी में ध्रुपद गायन प्रस्तुत किया। पखावज पर अंकित पारिख ने संगति दी।

तृतीय प्रस्तुति नयी दिल्ली के बलदीप सिंह ने स्वर्ण मंदिर दरबार साहिब की प्राचीन मर्यादा के मुताबिक शान पर चौताल बजाया। विलम्बित विलक्षण में छेड़ो का संग्रह एवं दुगुन, पक्की, दुगुन, तिगुन, व्याढ़ एवं पड़ाव ताल में लयों के साथ पंजाब की प्राचीन बंदिशें परने तथा नगाड़ो के खास बोलों के माध्यम से प्रस्तुति दी। इसी क्रम में रागश्री मंगलाचरण, आलाप, गुरुनानक देव महाराज का रागश्री में ध्रुपद सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। पखावज पर संगति श्री आशुतोष उपाध्याय ने दी। चतुर्थ प्रस्तुति इलाहाबाद के पं० प्रेमकुमार मलिक ने दी। वाराणसी के ही श्री अंकित पारिख ने पखावज पर एवं संतोष मिश्र ने सारंगी पर संगति दी।

इस अवसर पर सभागृह में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कार्यकारिणी परिषद के सदस्य प्रो० चित्तरंजन ज्योतिषी, पं० रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्रो० पी०सी० उपाध्याय, श्री के० चन्द्रमौलि, प्रो० एस० चूड़ामणिगोपाल, संगीत एवं मंचकला सकाय के शिक्षक, छात्र-छात्रायें एवं अन्य कलामर्मज्ञ उपस्थित थे। महोत्सव की अध्यक्षता करते हुए कलामर्मज्ञ इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने अपने सम्बोधन में कहा कि ध्रुपद महोत्सव की जो परम्परा आज आरम्भ हुई है उससे काशी की संगीत एवं सांस्कृतिक धारा को गति मिलेगी।

ध्रुपद महोत्सव के दूसरे दिन मंगलवार दिनांक १८ अक्टूबर, २०१६ को कलाकारों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति दी। राग अलाप जोड़, पखावज आदि की सुन्दर प्रस्तुतियों का कलारसिकों ने आस्वादन किया।

इस दिन की प्रथम प्रस्तुति जयपुर से आयीं डा० मधुभट्ट तैलंग ने राग हंस किंकणो में आलाप जोड़ 'अब हौं कासौ बैर करों' तथा राग धानी जोगी महादेव की प्रस्तुतियाँ दीं। उनकी अगली प्रस्तुति राग माला की थी। पखावज पर संगति प्रवीण भाई, सारंगी पर संतोष मिश्र ने किया। वादन में पखावज की प्रस्तुति दिल्ली के पं० दालचन्द्र शर्मा ने दी। चौताल, शिव परन, पंचदेव स्तुति, झाला और तीन ताल की प्रस्तुतियों से उन्होंने संगीत को नया पखावज दिया। वाराणसी के श्री अनीश मिश्र ने सारंगी पर संगति दी।

तृतीय प्रस्तुति पुणे से आये हुये पं० उदय भवालकर की थी। पखावज पर संगति पुणे के ही श्री प्रताप अवाड़ ने दी।

ध्रुपद महोत्सव के तीसरे दिन १९-१०-१६ को समापन समारोह अपराह्न ३ बजे आयोजित था। इसका शुभारम्भ इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के सदस्य सचिव डा० सच्चिदानन्द जोशी के उद्‌बोधन से हुआ। उन्होंने कहा कि कलाओं को जीवंत रखना सभी का दायित्व है। इसके साथ ही कीर्तन, बारादरी एवं हवेली संगीत को बचाना आवश्यक है।

तीसरे दिन के प्रथम कलाकार खैरागढ़ से आयी हुईं सोमबाला कुमार थीं। उन्होंने राग मुल्तानी में आलाप, जोड़, झाला और चौताल में बंदिशें प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। पखावज पर संगति श्री पृथ्वीकुमार ने की।

इसी क्रम में मुम्बई से आये द्वितीय कलाकार उस्ताद मो० बहाउद्दीन डागर ने रुद्रवीणा पर राग खमाज में आलाप एवं जोड़, झाला और झपताल में वादन प्रस्तुत किया। पखावज पर संगति श्री प्रताप अवाड़ ने दी।

तीसरे कलाकार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के गायन-वादन विभाग के ही प्रो० ऋत्विक् सान्याल ने राग छायानट में धमार की प्रस्तुति दी। बन्दिश थी- 'लचकत आवे'। पखावज पर संगति पं० दालचन्द्र शर्मा ने दी।

अध्यक्षता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० जी०सी० त्रिपाठी ने की। समापन समारोह में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय कार्यकारिणी के सदस्य पं० चित्तरंजन ज्योतिषी, डा० विश्वनाथ पाण्डेय, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के कलाकोश विभाग के अध्यक्ष डा० एन०डी० शर्मा, डा० विजय शुक्ल, प्रो० मिथिलेश चतुर्वेदी एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।